[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

E

Sr. No. of Question Paper : 3198

Unique Paper Code : 62057638

Name of the Paper : विशेष अध्ययन : एक प्रमुख साहित्यकार प्रेमचंद

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) वही संध्या का समय था। खेतों में कौए पंचायत कर रहे थे। विवादग्रस्त विषय यह था कि मटर की फलियों पर उनका कोई स्वत्व है या नहींय और जब तक प्रश्न हल न हो जाए, तब तक वे रखवाले की पुकार पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट करना आवश्यक समझे थे। पेड़ की डालियों पर बैठी शुक-मंडली में यह

P.T.O.

3198

प्रश्न छिड़ा हुआ था कि मनुष्यों को उन्हें बेमुरौवत कहने का क्या अधिकार है, जब उन्हें स्वयं अपने मित्रों से दगा करने में भी संकोच नहीं होता।

अथवा

रात वो किसी तरह कटी, मगर सवेरे भी कोई चमार न आया। चमारिनें भी रो-पीटकर चली गईं। दुर्गंध कुछ-कुछ फैलने लगी। पंडितजी ने एक रस्सी निकाली । उसका फंदा बनाकर मुर्दे के पैर में डाला, और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुंधला था। पंडितजी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गांव के बाहर घसीट ले गए। वहां आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का। उधर दुखी की लाश को खेत- में गीदड़ और गिद्ध, कुत्ते और कौए नॉच रहे थे। यही जीवन-पर्यत की भक्ति, सेवा और निष्ठा का पुरस्कार था!

(ख) दान और ब्रत में उनकी आस्था न थीय लेकिन लोकमत की अवहेलना न कर सकती थीं। विधवा का जीवन तप का जीवन है। लोकमत इसके विपरीत कुछ नहीं देख सकता। रेणुका को विवश होकर धर्म का स्वांग भरना पड़ता थाय किंतु जीवन बिना किसी आधार के तो नहीं रह सकता। भोग-विलास, सैर-तमाशे से आत्मा उसी भांति संतुष्ट नहीं होती, जैसे कोई चटनी और अचार खाकर अपनी क्षुधा को शांत नहीं कर सकता। जीवन किसी तथ्य पर ही टिक सकता है।

अथवा

वह अलग विरक्त भाव से सिर झुकाए खड़ी थी। उसके जीवन की सूनी मुडेर पर एक पक्षी न जाने कहां से उड़ता हुआ आकर बैठ गया था। उसे देखकर वह अंचल में दाने भरे आ!आ! कहती, पांव दबाती हुई उसे पकड़ लेने के लिए लपककर चली। उसने दाना जमीन पर बिखेर दिया। पक्षी ने दाना चुगा, उसे विश्वास-भरी आँखों से देखा, मानो पूछ रहा हो-तुम मुझे स्नेह से पालोगी या चार दिन मन बहलाकर फिर पर काटकर निराधार छोड़ दोगी; लेकिन उसने ज्योंही पक्षी को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, पक्षी उड़ गया और तब दूर की एक डाली पर बैठा हुआ उसे कपट-भरी आंखों से देख रहा था, मानो कह रहा हो-मैं आकाशगामी हूँ, तुम्हारे पिंजरे में मेरे लिए सूखे दाने और कुल्हिया में पानी के सिवा और क्या था!

2. "प्रेमचंद ने हिंदी कथा साहित्य की कर्मभूमि ही नहीं बदली बल्कि उसका कायाकल्प भी किया" कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

प्रेमचंद के नाटक 'कर्बला' की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विवरण दीजिए। (15)

3. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

अथवा

सुभागी कहानी के आधार पर सुभागी का चरित्र-चित्रण कीजिए। (15)

4. 'कर्मभूमि' उपन्यास स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि है।' इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

'कलम का सिपाही' के आधार पर प्रेमचंद के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालिए। (15)

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(क) कर्मभूमि में नारी जागृति।

(ख) कर्बला नाटक के स्त्री पात्र।

(ग) पंच परमेश्वर कहानी की भाषागत विशेषताएँ।

(घ) आनंदी का चरित्र-चित्रण। (5+5=10)